जिन्ना का सामाजिक न्याय : एक संक्षिप्त अवलोकन

अनामिका झा

दर्षनषास्त्र विभाग

बी.आर.ए. बिहार विष्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

जिन्ना का सामाजिक न्याय मुसलमानों के इर्द गीर्द घूमता नजर आता है जबकि सामाजिक न्याय सिद्धान्त की बुनियाद सभी मनुष्य एवं मानव–समुदायों को एक समान मानने पर आधारित है। सामाजिक न्याय वही है जहाँ किसी भी प्रकार की समाजिक बाधा से मुक्त न्याय सुनिष्चित करने की उम्मीद की जाती है। सामाजिक न्याय के उक्त मापदण्ड़ों को आधार मानकर यदि मुहम्मद अली जिन्ना के राजनीति–दर्षन का आज अवलोकन करते हैं तो पता चलता है कि उनकी राजनीति मुस्लिम समाज को सामाजिक न्याय दिलाने के नाम पर प्रारम्भ हुई जो अन्ततः मुस्लिम समाज के आन्तरिक सामाजिक अन्याय में विलीन होती चली गई। जिन्ना के सामाजिक न्याय का दर्षन इतिहास का एक ऐसा पन्ना है जिससे बहुत सीख लेने की आवष्यकता है। सामाजिक न्याय का अर्थ टुकड़ों–टुकड़ों में बंटे इंसान का पक्षपोषन नहीं है बल्कि यह अखण्ड मानवीय समुदाय की बेहतरी में बाधक संकीर्णता के विरूद्ध आवाज है जिससे मानवीय स्वतंत्रता, समता और सौहार्द्र जैसे गुणों का व्यक्ति–व्यक्ति के आचरण में विकास हो, तभी इससे आदर्ष–राष्ट्र और समाज का निर्माण हो सकता है जो सामाजिक न्याय के मापदंडों पर खड़ा उतरता है।

जिन्ना की राजनीतिक यात्रा के तीन चरण हैं–पहला एक देशभक्त जिन्ना, दूसरा हिन्दू–मुस्लिम एकता के स्तम्भ जिन्ना और तीसरे पाकिस्तान के संस्थापक जिन्ना। 19 फरवरी, 1921 को पूना में जिन्ना ने यह स्पष्ट कर दिया कि गांधी के असहयोग, खादी आदि के कार्यक्रम की जगह वे राजनीतिक कार्यक्रम के रूप में अपना कार्यक्रम चाहते थे। 1918 में उन्होंने नेहरू रिपोर्ट का विरोध भी किया जबकि मुसलमानों को उनकी जनसंख्या के अनुपात से कहीं अधिक स्थान देने का प्रस्ताव उसमें किया गया था। 1937 के चुनावों के बाद जब कांग्रेस ने मुस्लिम जनसम्पर्क की नीति अपनायी तो उससे जिन्ना बहुत घबड़ाए और इसीलिए 1939 में उन्होंने मुस्लिम लीग की ओर से दावा किया कि राजनीतिक शक्ति में मुस्लिम भारत और गैर मुस्लिम भारत का पचास–पचास प्रतिशत का साझा होना चाहिए। उनके राजनीति दर्शन का आकलन आज बेमानी साबित हो चुका है जिसमें उन्होंने कहा था कि भारत में लोकतंत्र का अर्थ होगा मुसलमानों, अछूतों, यहूदियों, पारसियों और ईसाईयों के ऊपर उनकी इच्छा के विरूद्ध हिन्दुओं का शासन। इसीलिए उन्होंने कांग्रेसी अत्याचार और हिन्दू आधिपत्य के विरूद्ध उत्तेजनात्मक नारे लगाये। उनका भ्रम था कि लोकतान्त्रिक प्रणालियां जो इंग्लैण्ड जैसे समांग राष्ट्र की धारणा पर आधारित है, भारत जैसे विषमांग देश में लागू नहीं हो सकतीं मुसलमानों में सैयद अहमद खाँ मुख्यतः तथा अनेक संगठन जैसे जमीअत–ए– उलेमा, अहरार और इत्तिहादे मिल्लत आदि जिन्ना के इस मत से सहमत नहीं थे।

आधुनिक भारत के निर्माण में मुस्लिम राजनीतिक चिन्तकों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है क्योंकि मुस्लिम नेताओं सहित मुस्लिम लीग और संगठनों ने आजादी की लड़ाई में अपनी सक्रियता दिखाई। उन्नीसवीं शताब्दी में सर सालार जंग के बाद मुस्लिम समाज में सैयद अहमद खाँ का नाम प्रभावी रहा जिनके अनुसार मुसलमानों सहित तत्कालीन भारतीय नागरिकों को पाश्चात्य ढ़ंग की शिक्षा जो उदार है, का पालन करना

चाहिए तथा इसलिए ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति भक्ति रखनी चाहिए। यही कारण है कि उन्होंने ईस्ट इण्डिया कम्पनी में नौकरी की न कि पतनशील मुगल सम्राट की। सैयद अहमद खां के विचार काफी व्यावहारिक थे क्योंकि वे चाहते थे कि पहले मुसलमान अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करें जिससे उन्हें सरकारी नौकरियों के लिए समुचित प्रशिक्षण मिल सके। सैयद अहमद खां मुसलमानों की दीन दशा को देखकर बहुत दुःखी थे और उनके शब्दों में "मुसलमान झूठे तथा निरर्थक दुर्भावों के प्रभाव में हैं और अपना भी भला–बुरा नहीं समझते तथा इनमें हिन्दुओं की तुलना में एक–दूसरे के प्रति ईर्ष्या और प्रतिशोध की भावना अधिक है तथा वे मिथ्या अहंकार के शिकार हैं।'1'

जिन्ना पर मुस्तफा कमाल के आधुनिकतावाद का प्रभाव था फिर भी वे इस्लामी धर्मतन्त्र के अन्तर्गत लोकतंत्र के भुलावे में फंस गये जो भारतीय राष्ट्रवाद के अन्तर्विरोधों और भ्रान्तियों से उपजा था। मुहम्मद अली का राजनीति दर्शन कह रहा था कि भारत में राष्ट्रवाद नहीं बल्कि सार्वभौमवाद, अन्तर्राष्ट्रवाद जीवित है इसलिए मुसलमान होने के नाते इनका मानना था कि ईश्वर ने मनुष्य को बनाया जबकि शैतान ने राष्ट्र का निर्माण किया। इसीलिए जिन्ना ने इस्लामिक राष्ट्र पाकिस्तान में अपने Diversity Management का vision दिया जिसमें Democratization, Equalitarian, version of Islam, Strict rule of law, तथा protective measures for women and minorities मुख्य मुद्दा था। अर्थात् जिन्ना के पाकिस्तान में भी Diversity (विविधता) मौजूद रहा जिसमें caste, religion, age, gender, ethnicity आदि को

1 : आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, डा0 वी0पी0 वर्मा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल,

प्रकाशक, आगरा–3, पृ0 317.

पाटना, उसके साथ सामाजिक न्याय करना महत्वपूर्ण था। 75 प्रतिशत सुन्नी तथा 20 प्रतिशत सिया और 5 प्रतिशत अन्य का झगड़ा मौजूद था।

जिन्ना ने पाकिस्तान सरकार के उद्देश्यों को बताते हुए कहा था कि "Governments aim and objective should be to serve the people and devise ways and means for their welfare and betterment." आगे उन्होंने लोकतान्त्रिक दृष्टिकोण से यह भी बताया कि "It is in the hands of people to put the government in power or remove it from power." लोकतन्त्र और सामाजिक न्याय को पाकिस्तान में उतनी तरजीह आगे नहीं मिली और अगर मिली तो वह 'Islamic Social welfare state' के रूप में इस्लामिक गुटबाजी के बाद। Today, people of Pakistan are confronting with various economic challenges and hardships, which are basically resulted by the deviation from the path that Quaid-e-Azam, Jinnah. " पाकिस्तान में आज economic and geo-political atmosphere is not in conducive to launch any concrete socio-economic reforms in the country." '2'

जिस सामाजिक न्याय को जिन्ना ने अंग्रेजों और हिन्दुओं से छीनकर पाकिस्तान के मुसलमानों को सौंपा था उस सामाजिक न्याय में भी वहीं सब मुद्दे हैं जो हल किये जाने हैं और जिनका हल केवल पाकिस्तान जैसे अलग–अलग देश बनाने भर से नहीं हो सकता। एक धर्म के देश में भी अलग–अलग जाति, वर्ग, संगठन आदि रहते हैं जिन्हें संतुलित करने का महत्व है। पाकिस्तान के इस्लामिक स्टेट में भी कई राजनीतिक गुट एवं पार्टियां हैं जिनके अन्तर्विरोधों के बीच स्वयं इस्लाम समर्थक आम–अवाम को भी

सामाजिक न्याय की आवश्यकता है। जिन्ना न तो दार्शनिक, धार्मिक या कोई समाज सुधारक व्यक्ति थे बल्कि वे एक राजनीतिज्ञ और संस्कार से वकील थे। ब्रिटिश साम्राज्यवादियों की 'फूट डालो और शासन करो' की नीति उसका एक राजनीतिक अवसरवाद था जो राष्ट्रवाद से जुड़ी भ्रान्तियों के कारण उपजा था। जब तक विदेशी साम्राज्यवाद के विरूद्ध स्वतंत्रता का आन्दोलन चलता रहा तब तक भारतीय राष्ट्रवाद की धारा सक्रिय रहीं परन्तु जैसे ही स्वाधीनता की सम्भावना उत्पन्न हुई तो शिक्षित मुसलमानों को भड़काया गया कि स्वाधीनता का अर्थ होगा बहुसंख्यक हिन्दुओं का लोकतान्त्रिक शासन। ऐसे में मुस्लिम जनता जो अलीगढ़ के शैक्षिक आन्दोलन से

2 : Mohammaad Ali Jinnah, Great Advocate of Social Justice and Equality "By

Madame, Farzane Raja, Federal Minister and Chairperson Benazir Income

Support Programme."

प्रभावित थी वह मुहम्मद अली और शौकत अली के सर्व इस्लामवादी विचारों से आन्दोलित हो गई और जिन्ना के झंडे के नीचे एकत्र हो गयी तथा पाकिस्तान की धर्मतान्त्रिक एवं साम्प्रदायिक मांग की जेहाद में शामिल हो गई।

1940 में गांधी–जिन्ना वार्ता में जिन्ना दृढ़ता और कट्टरतापूर्वक मुसलमानों के लिए एक पृथक राष्ट्र का तर्क देते रहे। 15 दिसम्बर 1944 को अपने पत्र में जिन्ना ने गांधी को लिखा कि "हमारा दावा है कि हम किसी भी परिभाषा अथवा कसौटी को क्यों न अपनायें, हिन्दू तथा मुसलमान दो बड़े राष्ट्र हैं। हम दस करोड़ का एक राष्ट्र हैं और सभ्यता, भाषा तथा साहित्य, कला, स्थापत्य, नाम व्यवस्था, मूल्य, धारणा, भाषा, विधि, नैतिक संहिताएं, परम्परा आदि के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। अपना दृष्टिकोण, जीवन दर्शन तथा अन्तर्राष्ट्रीय कानून के आधार पर मुसलमानों का एक राष्ट्र के रूप में अपना आधार है इसलिए देश का विभाजन ही हिन्दू–मुस्लिम समस्या का एकमात्र हल है।" जिस देश के विभाजन की बात जिन्ना ने की उसके बारे में फिराक गोरखपुरी की पंक्तियां है–"सरजमीने हिन्द पर अकवामें आलम के फिराक, काफिले आते गये और हिन्दूस्ताँ बनता गया।" ऐसे में आने वाले सभी ने, जो काफिले में अपनी भागीदारी दी वे अलग–अलग राष्ट्र की मांग करें तो यह न्यायोचित नहीं लगता । फिर भी देश का यह विभाजन जिन्ना के सामाजिक न्याय का एक नमूना है जिससे आज शिक्षित मुसलमानों की भी सहमति शत–प्रतिशत नहीं है। मुहम्मद अली ने ठीक ही कहा था कि "भारत अमेरिका से भी श्रेष्ठ होगा क्योंकि वह केवल एक संयुक्त राज्य नहीं होगा बल्कि संयुक्त धर्म भी होगा।'' '3'

ऑगस्टाइन, एक्वीनस, बोर्स और फेनेलों की तरह आधुनिक भारत के मुस्लिम चिन्तकों में मुहम्मद अली ने भी गांधी–दर्शन के अनुरूप यह माना था कि मानवीय कानून के प्रति निष्ठा के मुकाबलें में ईश्वरीय विधान के प्रति निष्ठा का पहला स्थान होना चाहिए। परन्तु गांधी का ईश्वरीय विधान, सार्वभौम, शाश्वत आध्यात्मिक–नैतिक मूल्य था जबकि मुहम्मद अली जिन्ना आदि का ईश्वरीय विधान केवल कुरान में ही वर्णित था और यह बीसवीं–इक्कीसवीं शताब्दी के वैश्विक दर्शन के प्रतिकूल था। '4'

3 : Proceedings of the London Round Table Conference, 1930-31, p. 98-106.

4 : आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, डा. बी.पी. वर्मा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशक,

आगरा–3, पृ0 328, 1975.

सामाजिक न्याय, वर्तमान वैश्विक जगत् की मुख्य धारा कही जा सकती है जो वस्तुतः वितरणात्मक न्याय (Distributive Justice) का एक हिस्सा है जिसमें समान अवसर के सिद्धान्त का संचार सामाजिक व्यवस्था का आवश्यक अंग है और यही किसी राजनीति दर्षन या राष्ट्र के निर्माण कि आदर्ष पृष्ठभूमि है। यह जिन्ना के सामाजिक न्याय के दर्शन की संकीर्णता और अदूरदर्षिता कही जा सकती है क्योंकि नये विश्व के अनुरूप लोकतान्त्रिक और धर्मनिरपेक्ष गणराज्य के रूप में वे पाकिस्तान का निर्माण नहीं कर सके। हिन्दुओं ने भारत में मुसलमानों को संवैधानिक मर्यादा में कबूल किया परन्तु जिन्ना के पाकिस्तान में गैर मुस्लिमों को मजबूत संवैधानिक आधार नहीं हासिल हो सका। जिन्ना ने फूट डालो और राज करो की ब्रिटिश कूटनीति और उदार हिन्दूवादी राजदर्षन या इतिहास को समझने में भूल की। जिन्ना के पास कोई वृहद समाज–दर्शन या धनात्मक एजेण्डा नहीं था सिवाय इसके कि वह हिन्दूवाद के विरूद्ध इस्लामवाद के अहं पर चढ़कर राजनीति के षिखर को हांसिल करते। हिन्दू राष्ट्रवादियों की तरह जिन्ना ने इस्लाम धर्मावलम्बियों में सुधारात्मक चेतना का विस्तार करने के बदले राजनीति में अल्पसंख्यकों की वकालत का बीरा उठाया जिससे उन्हें पाकिस्तान के संस्थापक नेता के रूप में प्रतिष्ठा मिली परन्तु इस्लाम जिसका शाब्दिक अर्थ शान्ति है की राष्ट्रीय स्थापना के बाद से लेकर आज तक शान्ति की स्थापना नहीं हो सकी है।

निष्कर्सतः हक और हुकूक की लड़ाई का नाम है सामाजिक न्याय जो समाज की असमानताओं को पाटता है तथा संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण सुनिश्चित करता है। मानवीय सम्मान और सत्कार की सार्वभौम प्रतिष्ठा का नाम है सामाजिक न्याय। परन्तु आधुनिक विश्व में जिस समाजिक न्याय के दर्शन का बोलबाला है उसमें दार्शनिक सूक्ष्मता से झांकने पर ऐसा पता चलता है कि कुछ लोग, कुछ राजनीतिक पार्टियां, कुछ नेता और कुछ धर्मावलम्बी सामाजिक न्याय के नाम पर ही सामाजिक अन्याय का उपभोग करते हैं। कुछ उदाहरणों में ऐसा भी देखा जा सकता है कि सामाजिक न्याय का कोई एक मुद्दा लेकर ईमानदारी से चलने के बावजूद वह मुद्दा तो समाप्त हो जाता है परन्तु उसके साथ फिर नयी अन्यायपूर्ण समस्याएँ भी जन्म लेती है और इस सूक्ष्मता को पकड़ने में मोहम्मद अली जिन्ना जैसे कई विचारक या नेता असमर्थ रह जाते है।

सन्दर्भ सूचीः–

1. आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, डा0 वी0पी0 वर्मा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, प्रकाशक, आगरा–3, पृ0 317.

2. Mohammaad Ali Jinnah, Great Advocate of Social Justice and Equality "By Madame, Farzane Raja, Federal Minister and Chairperson Benazir Income Support Programme.

3. Proceedings of the London Round Table Conference, 1930-31, p. 98-106.

4. आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, डा. बी.पी. वर्मा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशक, आगरा–3, पृ0 328, 1975.